Poem

MOTHER'S DAY

बतलाओ ना माँ

-संजीव जैन
प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय, कडकडूमा कोर्ट, दिल्ली

मैं फिर से बच्चा हो जाऊँ,
तुम उसी वेश में आओ ना माँ।
बतलाओ ना माँ।

माथे पर सूरज सी बिंदी
वही ओढ़नी तारों वाली ।
हाथों पर मेहंदी सजती हो,
और मुस्कान बहारों वाली।
गीता का उपदेश था जिसमें
फिर वो कथा सुनाओ ना माँ।
कान्हा तेरा कहीं खो गया,
फिर आवाज़ लगाओ ना माँ।
बताओ ना माँ.....

चल चलते हैं एक दिन दोनों
अपने बचपन वाले घर में।
वही ओढ़नी तारों वाली
ओढ़ कर फिर से आओ ना माँ।
लीप बुहार कच्चे आँगन को,
चूल्हा वही जलाओ ना माँ ।
एक बाजरे की रोटी पर,
मक्खन ज़रा लगाओ ना माँ।
भजन तुम्हारा लोरी वाला,
मंद मंद फिर गाओ ना माँ।
बताओ ना माँ।

मातृत्व

-मनिका खमथान

मातृत्व एक बेहद दिलचस्प अनुभव है। इसमें आप असीम प्यार के अलावा कभी कभी घुटन भी महसूस करेंगे। आप को बाकी लोग जज भी करेंगे। मां को ममता और त्याग की मूर्ति बना कर पूजने की रिवायत बहुत पुरानी है, जिसमें अब दरार आने लगी है। मेरा मानना है कि मां को ये दर्जा भी पितृसत्ता ने ही दिया है जिससे उनका सिस्टम सुचारू रूप से चलता रहे औरत उनकी एजेंट ही बनी रहे। मुझे अपनी मां जैसी मां कभी नहीं बनना था मगर जो मैं उनसे सीखना चाहती थी वो भी नहीं सीख पाई। वो बात कभी और.

मैं नहीं चाहती कि कीकी मुझ में और राजन में कोई अंतर न महसूस हो। लड़कियों को पिता से एक दूरी बना कर रखने की ट्रेनिंग शुरू से ही मिलती है जिससे उसको पुरुषों से दूरी बना कर रखने की शिक्षा मिल सके। और हां मातृत्व एक चॉइस है ये ने बहुत सुंदर तरह से सबके सामने रख ही दिया है। मातृत्व एक gender neutral भावना है जो किसी पुरुष में किसी महिला से ज्यादा भी हो सकती है।

बात बाक़ी एक तरफ मदर्स डे पर अम्मा को शुभकामनाएं हमने भी भेजी।